उजड़ रहा है पंजाब का पर्यावरण

भारत डोगरा व रीना मेहता

पंजाब की पहचान देश के एक समृद्ध राज्य के रूप में है, मगर इस ओर बहुत कम ध्यान गया है कि कई महत्वपूर्ण संदर्भों में पंजाब का पर्यावरण बहुत तेज़ी से उजड़ रहा है। विशेषकर मिट्टी, पानी व जैव विविधता की रक्षा जैसे बुनियादी सरोकारों की दृष्टि से देखें तो आज पंजाब के पर्यावरण को संकटग्रस्त ही माना जाएगा।

जहां एक ओर पंजाब में हरित क्रांति के दौर में रासायनिक खाद का अधिक व असंतुलित उपयोग हुआ है, वहीं दूसरी ओर, गोबर व कम्पोस्ट जैसे आर्गेनिक तत्व बढ़ाने वाली खाद का कम उपयोग हुआ है। इस कारण पंजाब के खेतों की मिट्टी में मुख्य व सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो गई है। पंजाब विज्ञान व तकनीकी परिषद द्वारा तैयार की गई पर्यावरण रिपोर्ट में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के अध्ययनों के आधार पर बताया गया है कि मिट्टी के 1,80,000 नमूनों की जांच में 78 प्रतिशत में आर्गेनिक कार्बन की कमी पाई गई। एक अन्य अध्ययन से पता चला कि 49 प्रतिशत मिट्टी के नमूनों में ज़िंक की कमी है।

फसल अवशेषों को खेतों में जलाने से भी मिट्टी की बहुत क्षति होती है। साथ में जो वायु प्रदूषण होता है वह भी एक गंभीर समस्या है।

पंजाब में 1970-71 से 2005-06 के बीच रासायनिक खाद की खपत 8 गुना बढ़ गई (213 हज़ार टन से 1694 हज़ार टन)। भारत में कुल कीटनाशकों की खपत में 17 प्रतिशत का उपयोग पंजाब में होता है। रासायनिक खाद, कीटनाशकों, खरपतवारनाशकों आदि के अधिक उपयोग का बहुत प्रतिकूल असर मिट्टी की गुणवत्ता, उसमें मौजूद केंचुओं व सूक्ष्म जीवाणुओं व उसकी उर्वरता पर पड़ता है। अधिक व भारी कृषि मशीनों का प्रतिकूल असर भी मिट्टी की उर्वरता व स्थिरता पर पड़ता है। सतही व भूजल स्रोतों में नाइट्रेट व फॉस्फेट के पहुंचने से जल प्रदूषण भी बढ़ रहा है।

पंजाब में फसल चक्र व फसलों की किस्मों में ऐसे बदलाव जल्दबाज़ी व नासमझी से किए गए जिससे यहां कृषि के लिए पानी का दोहन बढ़ गया। औद्योगिक उपयोग के लिए भी जल दोहन बढ़ गया है। इस कारण पांच नदियों के विशाल जल भंडार के लिए विख्यात पंजाब भी जल संकट की ओर बढ़ रहा है। राज्य का 75 प्रतिशत क्षेत्र अधिक जल दोहन की श्रेणी में आ चुका है। जल स्तर प्रति वर्ष औसतन 55 सेंटीमीटर की दर से नीचे जा रहा है व भविष्य के लिए और भी विकट चेतावनियां मिल चुकी हैं।

भूजल व नदियों दोनों में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है व विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार इस बढ़ते जल प्रदूषण के साथ त्वचा, पेट, आंखों की समस्याओं के अलावा कैंसर जैसी गंभीर बीमारियां भी जुड़ी हैं। अमृतसर का महल गांव इस कारण चर्चा में था, जहां जल प्रदूषण को जन्मजात विकृतियों की वजह भी माना जा रहा है। पास में स्थित बेहद प्रदूषित दुर्गंध नाले के पास उगाई जा रही 11 सब्ज़ियों की जांच की गई तो उनमें स्वीकार्य मानदंडों से कहीं अधिक भारी धातुएं पाई गईं। ऐसी ही स्थिति लुधियाना ज़िले के बुड्ड नाले के पास उगाई गई सब्ज़ियों में भी देखी गई। यहां के आसपास के गांवों में हिपेटाइटिस, टायफाइड, दस्त, त्वचा रोग व कैंसर जैसी बीमारियां अधिक होती हैं। घग्गर नदी के प्रदूषण से अधिक प्रभावित पटियाला ज़िले के गांवों जैसे समना व घनौर में कैंसर के मरीज़ बहुत अधिक पाए गए हैं।

भूजल में युरेनियम के समाचार मिलने पर विभिन्न क्षेत्रों के ट्यूबवेल के पानी के नमूनों की जांच की गई तो 1642 में से 1142 में युरेनियम की उपस्थिति का टेस्ट पाज़िटिव

रहा। बठिंडा में यह स्थिति अधिक चिंताजनक पाई गई।

पंजाब के खेतों में परंपरागत बीजों द्वारा उपलब्ध करवाई गई जैव विविधता बहुत तेज़ी से लुप्त हुई है। पर्यावरण रिपोर्ट में दिए गए आंकड़ों के अनुसार गाय-बैल, भेड़, बकरी व सुअर में आश्चर्यजनक गति से कमी आई है।

गांवों के अधिकतर तालाब व पोखर लुप्त हो चुके हैं या उन पर अतिक्रमण हो चुका है। उनमें फेंकी गई गंदगी से प्रदूषण और बढ़ रहा है। नदी हो या तालाब, हर जगह जलीय जीव संकट में है। गोरैया हो या खेतों में परागण में सहायता करने वाले मित्र पक्षी व कीट-पतंगे, ज़हरीले रसायनों के अधिक छिड़काव व अन्य कारणों से इन सभी की संख्या कम होती जा रही है। स्थानीय प्रजातियों के पेड़ों की हरियाली भी कम हो रही है व उनमें शरण लेने वाले जीव-जंतु भी कम हो रहे हैं। केंचुआ किसानों का महत्वपूर्ण मित्र माना गया है, पर रासायनिक खाद व कीटनाशकों के हमले ने असंख्य केंचुओं को पंजाब की मिट्टी में समाप्त कर दिया है।

अब समय आ गया है कि पर्यावरण की रक्षा के कार्य को सभी मोर्चों पर अधिक निष्ठा और समझदारी से संभाला जाए। पर्यावरण की क्षति पर मात्र चिंता प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। ज़रूरत तो इस बात की है कि यह क्षति किस तरह की अनुचित व विकृत नीतियों के कारण हो रही है, इसकी समझ भी बनाई जाए ताकि नीतिगत सुधार कर पर्यावरण की रक्षा की राह तैयार की जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***